महाभारत कालीन कृषि एवं पशु–पालन उद्योग

डॉ0 अनिल कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर (प्राचीन इतिहास)
गोपाल जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रेवती, बलिया

महाभारत काल से बहुत पहले ही वैदिक युग के भ्रमणशील आर्य, एक नियमित समाज व्यवस्था के अन्तर्गत संगठित होकर अपनी जीवनचर्या को स्थायी रूप दे चुके थे। उनकी यह स्थिति उनके आर्थिक जीवन को अत्यधिक उन्नत एवं व्यापक बनाती थी। महाभारत में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुधन तथा पशुपालन बताया गया हैं। महाभारत में कहा गया है कि संसार में समृद्धि लाभ के जो भी साधन है कृषि व्यवस्था उनमें सर्वश्रेष्ठ है। स्वयं लक्ष्मी कहती है, ''कृषि निरत वैश्य के शरीर में मैं स्वयंम् वास करती हूँ।''[1] महाभारत के भीष्म पर्व में पशुपालन, कृषि और वाणिज्य के लिए वैश्यों का स्वाभाविक कर्म बताया गया है।[2] भीष्म पर्व में पशुपालन, कृषि और वाणिज्य के लिए वैश्यों का स्वाभाविक कर्म बताया गया है।[3] भीष्म के अनुसार ब्रह्मा ने पशुओं की रचना करने के बाद उनकी देख–रेख का भार वैश्यों के ऊपर छोड़ दिया था। अतः वैश्यों को कृषि के साथ–साथ पशुपालन से विमुख नहीं होना चाहिए।[4] कृषि के लिए उपयुक्त महीनों का उल्लेख मिलता है।[5] कृषि की एकतरफ प्रशंसा की गयी है, तो दूसरी तरफ शांति पर्व में एक स्थानपर तुलाधार के माध्यम से होने वाली खेतों से भूमिगत जीवों की हत्या, हल जोतने वाले बैलों की दुर्दशा के कारण कृषि की निंदा भी की गयी है।

इस काल में बैलों के माध्यम से खेती का उल्लेख मिलता है।[6] बैलों की सहायता से अन्न का मर्दन भी किया जाता था और भूसा को अलग करने के लिए साफ करने के लिए 'शूर्प' का भी उल्लेख मिलता है।[7] सेवकों से भी कृषि कार्य में सहायता लिया जाता था। उद्योग पर्व के 33वें अध्याय में कहा गया है कि नौकर खेती की देखभाल भली–भाँति से नहीं करते, इसलिए खेती की देखभाल वैश्यों को स्वयं अपने से करना चाहिए।[8] एकमात्र छोटी सी लापरवाही से बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है, इसलिए गृहस्थ को स्वयं खेती की देखभाल करनी चाहिए और दूसरे के भरोसे नहीं छोड़नी चाहिए।[9] भूमि को जोतने व बुवाई करने का उल्लेख मिलता है। जो भूमि कृषि योग्य होती थी या जोतने योग्य होती थी, उस भूमि को 'क्षेत्र' कहा जाता था।[10] स्वयं राजा कुरू ने 'क्षेत्र' में हल चलाने का कार्य किया था। कृषि अधिकतर प्रकृति पर निर्भर थी। शांति पर्व से ज्ञात होता है कि वर्षा काल के समय में लोग मेघ की ओर

ध्यान लगाये देखते थे और जल की प्रतीक्षा करते थे।[11] यक्ष के प्रश्नोत्तर में युधिष्ठिर कहते हैं कि पृथ्वी अन्न है और आकाश जल है।[12]

कृषि उद्योग को राज्य का संरक्षण

महाभारत के सभा पर्व से पता चलता है कि आवश्यकता पड़ने पर कृषकों को राज्य की ओर से पूरा सहयोग मिलता था। जो कृषक दरिद्र होते थे, राजा के द्वारा उनके जीविका के लिए तथा कृषि के लिए बीज आदि की व्यवस्था किया जाता था।[13] आवश्यकता पड़ने पर राजा के द्वारा राजकोष से कृषक को उचित ब्याज पर कर्ज देने की व्यवस्था थी। महाभारत में कृषि के उद्योग को राज्य की तरफ से पूरा संरक्षण प्राप्त था। कई जगह यह उल्लेख है कि राजा को उनकी आय के हिसाब से अधिक कर नहीं लेना चाहिए। राज्य की ओर से कृषि की उन्नति के लिए बहुत ध्यान रखा जाता था तथा कृषकों को भी अनेक सुविधाएँ प्रदान कर उनके उत्साह को बढ़ाता था।

फसल, वृक्ष और औषधियाँ

महाभारत में चैत्र तथा अश्विन की फसलों का उल्लेख मिलता है। जौ[14] और धान की भूसी का वर्णन मिलता है। तिल की खली, चावल कनी अगहनी चावल का भी उल्लेख मिलता है।[15] उड़द, तिल, जौ का सत्तु, सूर्यपर्णी (जंगली उड़द जौ दाल बनाने के काम में आता था), सांवा आदि का भी वर्णन मिलता है।[16] भीष्म पर्व में गेहूँ, जौ, चना, मूंग और चावल सात्विक आहार बताये गये है। लाल मिर्च, राई, लहसुन, प्याज, आदि का भी उल्लेख मिलता है।[17] गेहूँ, जौ, चना, मूंग, धान, मक्का, उड़द, हल्दी, धनिया आदि की खेती बीज बोकर की जाती थी।[18] द्रोण पर्व में मुनक्का, दाल, धान, जौ,[19] आदि की खेती करने का उल्लेख प्राप्त होता है।[20] जौ, गेहूँ, तिल, ब्रीही, उड़द आदि की खेती होती थी। यव (धान्य), उड़द (भाषण), कुथली (कुलत्थ) आदि पौधों का उल्लेख प्राप्त होता है।[21] फलदार वृक्षों के बारे में कहा गया है कि कंद–मूल, फल का आहार करो। आय (आम), आमड़ा (अभ्रांत), कदम्ब, आवला, जामुन, करवीर आदि का वर्णन मिलता है। आमला, कदम्ब, बैर, बेल, खजूर, हर्रे, बहेड़े की खेती की जाती थी।[22] वन पर्व में एक स्थान पर मिलता है कि कैलाश पर्वत पर परम सुन्दर केले का बगीचा था जो कई योजन दूर तक फैला था। केले के वृक्ष बहुत मोटे थे।[23] कैलाश पर्वत पर ऋतुओं के फलों से सुशोभित एवं उनके झुके वृक्षों का वर्णन मिलता है।[24] महाभारत में साग–सब्जियो, फलों के साथ–साथ फूलों के भी वर्णन प्राप्त होते है जो उद्यान की शोभा बढ़ाते है। सभा पर्व में अशोक, चम्पा, नागपुष्पा, पुन्नाग, केवड़ा आदि मनोहर वृक्षों का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त किकिड़ी, मुनीपुष्प, धुर्धर, पाटल, अतिमुलक, नलमालिक, योधिक, क्षीरिका पुष्प, निुगुन्डी, लांगली, जया कर्णिकार, अशोक इत्यादि का भी उल्लेख मिलता है।[25] महाभारत में कुमुद, पुकउरीक, लोकनंद, उत्पल, कलदार और कमल का उल्लेख है।[26] बहुत से रेशेदार पौधों का भी उदाहरण प्राप्त

होता है जैसे सेमल[34] एवं नरकूल।[27] अनुशासन पर्व में सन की भी खेती का वर्णन मिलता है।[28] इन सभी पौधों के अतिरिक्त वनस्पतियों एवं लताओं का भी उल्लेख मिलता है। गुल्म (कुश) लता (वृक्ष पर फैलने वाली) और तृण (घास) आदि।[29] अश्वनी कुमार अनेक रंग की वस्तुओं का सम्मिश्रण से सब प्रकार की औषधियाँ तैयार करते थे।[30] शांति पर्व में लता, बेलों, वृक्षों और औषधियों की चर्चा की गई है।[31] खस नामक तिनकों का भी वर्णन मिलता है। अनुशासन पर्व में भी लता एवं औषधियों के बारे में जानकारी मिलती है।[32]

दुर्भिक्ष एवं सिंचाई व्यवस्था

महाभारत में सिंचाई कार्य प्रकृति के अतिरिक्त झील, झरनों, तालाबों, कुल्पाओं आदि से किया जाता था। जहाँ स्वाभाविक जल वर्षा नहीं होती थी वहाँ आवश्यकता पड़ने पर तालाब खुदवाना राजा का कर्त्तव्य माना जाता था।[33] हिमालय से निकलने वाली सरयू नदी बारहों महीने जल प्रवाह किया करती थी, कोशल राज्य सरयू के तटवर्ती होने के कारण सिंचाई एवं अन्य प्रयोजनों के लिए जल की पर्याप्त उपलब्धि रहती होगी और वहाँ के किसान एकमात्र वर्षा के जल पर ही निर्भर नहीं रहते रहे होंगे। महाभारत काल में सिंचाई के सम्बंध में अनेक पर्याप्त उल्लेख मिलता है। उग्रश्रवा जी कहते हैं कि जल ही देवता है, तथा जल ही पितृगण है।[34] महाभारत कालीन कृषि अधिकांश प्रकृति पर निर्भर थी।[35] वर्षा के लिए देवता से प्रार्थना का भी उल्लेख मिलता है।[36] स्थान–स्थान पर बड़े–बड़े जलाशय भी सिंचाई के लिए जल से भरे थे।[37] बड़े तालाबों में वर्षों तक पानी भरा रहता था तथा कुछ तालाबों में केवल वर्षा के समय से ही जल रहता था। इससे यह पता चलता है कि सिंचाई के लिए जलाशयों का अत्यधिक प्रयोग होता था। जो लोग नदियों के किनारे बसे थे उन लोगों को नहरों से जल प्राप्त होता रहा होगा क्योंकि सिंचाई के लिए छोटी–छोटी नालियों का उल्लेख भी जगह–जगह मिलता है।[38] उद्योग पर्व में सिंचाई के लिए नहरों का उपयोग करने का उल्लेख भी मिलता है।[39] पर्वतों पर वर्षा का एकत्र जल भी सिंचाई के लिए पर्याप्त होता था।[40] वन पर्व से पता चलता है कि सिंचाई के लिए विभिन्न रूपों का उदाहरण मिलता है।[41] बिन्दुसार नामक एक विशाल तालाब का उल्लेख कैलाश पर्वत पर मिलता है।[42] कहा गया है कि सौभाग्यशाली

महाभारत में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुधन तथा पशुपालन बताया गया हैं। महाभारत में कहा गया है कि संसार में समृद्धि लाभ के जो भी साधन है कृषि व्यवस्था उनमें सर्वश्रेष्ठ है। महाभारत के समय कृषि का विकास हो चुका था। कृषि कार्य हल तथा बैलों के माध्यम से किया जाता था। महाभारत में पशु–पालन के सम्बंध में कहा गया है कि पशु–पालन की पूरी जिम्मेदारी वैश्यों पर निर्भर थी। रामायण की तरह महाभारत में भी गाय को सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस काल में समाज में गोपालन को अत्यधिक आवश्यक माना जाता था। वैसे महाभारत में दूसरे पशु जैसे–हाथी, घोड़ा, बैल, गधा आदि का भी उल्लेख

राजा के राज्यकाल में समय के अनुसार वर्षा होती है, कृषकों को बीज व कर्ज प्राप्त होते हैं, राजा के माध्यम से सच्चे अधिकारियों की नियुक्ति किया जाता था। इन्हीं समस्त कार्यों से राष्ट्र समृद्धि और विकास करता है।

महाभारत के समय कृषि का विकास हो चुका था। कृषि कार्य हल तथा बैलों के माध्यम से किया जाता था। हल काष्ट का होता था उसमें फाल तथा लोहे का वह भाग लगा होता था जो खेत जोतते समय भूमि के अंदर रहता था। वैष्णव यज्ञ में सोने के हल से भूमि जोतने का वर्णन प्राप्त होता है। एक स्थान पर लोहे के मुख वाले काष्ट की बात कही गयी है। हल और जुए के संलग्न लकड़ी के भाग को 'हर्षा' कहते थे। कृषि के उपकरणों में फरसे का भी उल्लेख महाभारत में मिलता है। कुदाल, कुठार, ढात्र आदि उपकरणों का संग्रह शिविर भी किया जाता था।

कृषि सम्बंधी श्रमिक

महाभारत में श्रमिकों का नामोल्लेख तो नहीं मिलता है परन्तु कृषि और उद्योग–धंधों के जो विस्तृत वर्णन मिलते हैं उन सबसे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि शिल्प व कृषि कार्य में दक्ष अनेक श्रमजीवी वर्ग उस समय विकसित हो चुके रहे होंगे। महाभारत से प्रतीत होता है कि राज्य में श्रमिकों की सुरक्षा के लिए राजा जागरूक रहता था। महाभारत में एक स्थान पर नारद ने युधिष्ठिर से पूछा, क्या आप अपने राज्य में श्रमिकों की तरफ ध्यान देते हैं? राज्य की समृद्धि श्रमिकों के सहयोग पर ही अवलम्बित है।

पशु–पालन उद्योग व चिकित्सा

महाभारत में पशु–पालन के सम्बंध में कहा गया है कि पशु–पालन की पूरी जिम्मेदारी वैश्यों पर निर्भर थी। रामायण की तरह महाभारत में भी गाय को सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस काल में समाज में गोपालन को अत्यधिक आवश्यक माना जाता था। वैसे महाभारत में दूसरे पशु जैसे–हाथी, घोड़ा, बैल, गधा आदि का भी उल्लेख जगह–जगह मिलता है। गायों की देख–रेख करने के लिए गृहस्थ को उपदेश दिया गया है। यह कहा गया है कि केवल नौकरी व घरवालों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। इससे गो–पालन अच्छी तरह से नहीं हो पाता।

पशु चिकित्सा

महाभारत काल में पालतू पशुओं के बीमार पड़ने पर उनकी चिकित्सा की व्यवस्था भी थी। हस्तिसूत्र, अश्वसूत्र आदि की चिकित्सा का ज्ञान राजाओं के लिए आवश्यक था। इससे प्रतीत होता है कि उस काल के समाज में काफी लोगों को पशुपालन के बारे में विशेस ज्ञान था। ऐसा देखा जाता है कि उन दिनों पशुओं की देख–रेख के लिए बड़े–बड़े राजा पशु विशेषज्ञों को रखते थे।

अश्व का ज्ञान

राजा नल अश्व ज्ञान के विशारद थे। घोड़े की पहचान व उसे चलाने में वे असमान्य रुप से पटु थे। अश्वज्ञान के बदले उन्होंने राजा ऋतुपर्ण से पासा फेकना सीखा था। नकुल भी अश्व ज्ञान के पंडित थे। अज्ञातवास के समय विराट नगर में अपना परिचय देते हुए पाण्डवों ने कहा था, 'मैं राजा युधिष्ठिर के अश्वों की देखभाल करता हूँ। घोड़े के स्वभाव, उसकी चिकित्सा, निराकरण, अड़ियल घोड़े को सीधे रास्ते पर लाना एवं उनकी चिकित्सा के बारे में अच्छी तरह जानता हूँ।

गो–विद्या

सहदेव गो–विषय में पण्डित थे। विराटपुरी में उन्होंने भी अपना परिचय गो–विद्या के ज्ञाता के रूप में दिया था। शांति पर्व के कुछ पालतू व अन्य पशुओं के रोगों की चर्चा मिलती है। अच्छे नस्ल के घोड़ों के लक्षण का उल्लेख वन पर्व में बाहुक के संवाद के माध्यम से हुआ है। पालतू पशुओं के चारे के लिए भूसा, घास आदि की व्यवस्था की जाती थी। पशुओं के स्थान की व्यवस्था की जाती थी। पशुओं के स्थान को गोष्ठ और घोषोड अर्थात् गोशाला कहते थे। साड़ों का प्रयोग गर्भाधान के लिए किया जाता था।[56] एक स्थल पर कौरवों द्वारा विराट के गोष्ठों में भगदड़ मचाने और गौओं को अपहृत करने का उल्लेख है। यह उल्लेख प्रारम्भिक जनों के सघर्ष की छवि प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

1. महाभारत, अनुशासन पर्व, अनु0 पं0 रामनारायण शास्त्री, गीता प्रेस, गोरखपुर, अध्याय 11, श्लोक 19, पृ0 5461।
2. कृषि गौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्य कर्मः स्वभावजम्।महाभारत, भीष्म पर्व, अध्याय 42, श्लोक संख्या 44, पृ0 2799।
3. वैश्यस्यापि हि यो धर्मस्तंते वक्ष्यामि शाश्रवतम्। वही, शांति पर्व, अध्याय 60, श्लोक संख्या 21–23, पृ0 4580।
4. वही, आदि पर्व, अध्याय 25, श्लोक संख्या, 12–14, पृ0 95।
5. कृषि गौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्य कर्मः स्वभावजम्।महाभारत, भीष्म पर्व, अध्याय 42, श्लोक संख्या 44, पृ0 2799।
6. वही, अनुशासन पर्व, अध्याय 83, श्लोक संख्या 18, पृ0 5721।
7. वही, शांति पर्व, अध्याय 165, श्लोक संख्या 12, पृ0 4841।
8. वही, उद्योग पर्व, अध्याय 33, श्लोक संख्या 86, पृ0 2132।
9. वही, उद्योग पर्व, अध्याय 33, श्लोक संख्या 86, पृ0 2132।
10. वही, शल्य पर्व, अध्याय 52, श्लोक संख्या 4, पृ0 4281।
11. वही, शांति पर्व, अध्याय 37, श्लोक संख्या 22, पृ0 4517।

12. वही, अरण्य पर्व, अध्याय 313, श्लोक संख्या 86, पृ0 1831।
13. वही, विराट पर्व, अध्याय 1, श्लोक संख्या 12–13, पृ0 1842।
14. वही, सभा पर्व, अध्याय 5, श्लोक संख्या 79, पृ0 681।
15. वही, शांति पर्व, अध्याय 179, श्लोक संख्या 21, पृ0 4882।
16. वही, शांति पर्व, अध्याय 280, श्लोक संख्या 15–16, पृ0 5147।
17. वही, भीष्म पर्व, अध्याय 41, पृ0 2778।
18. वही, भीष्म पर्व, अध्याय 41, श्लोक संख्या 13, पृ0 2778।
19. वही, द्रोण पर्व, अध्याय 63, श्लोक संख्या 9, पृ0 3263।
20. वही, द्रोण पर्व, अध्याय 63, श्लोक संख्या 15, पृ0 3263।
21. वही, अनुशासन पर्व, अध्याय 88, श्लोक संख्या 3, पृ0 5744; वही, अनुशासन पर्व, अध्याय 111, श्लोक संख्या 71–72, पृ0 5846।
22. महाभारत, वन पर्व, अध्याय 24, श्लोक संख्या 16–17, पृ0 1014; वही, वन पर्व, अध्याय 64, श्लोक संख्या 3–5, पृ0 1120।
23. वही, वन पर्व, अध्याय 146, श्लोक संख्या 58, पृ0 1356।
24. वही, वन पर्व, अध्याय 158, श्लोक संख्या 42–51, पृ0 1388–1389।
25. वही, अश्वमेघिक पर्व, पृ0 6342 (श्रीमन भगवान उवाच)।
26. वही, वन पर्व, अध्याय 158, श्लोक संख्या 52–57, पृ0 1389।
27. वही, अश्वमेघिक पर्व, अध्याय श्रीमन् भगवान उवाच, पृ0 6341।
28. वही, भीष्म पर्व, अध्याय 63, श्लोक संख्या 13, पृ0 2898।
29. वही, अनुशासन पर्व, अध्याय 23, श्लोक संख्या 40, पृ0 5553।
30. महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय 58, श्लोक संख्या 23, पृ0 5655।
31. वही, आदि पर्व, अध्याय 3, श्लोक संख्या 65, पृ0 52।
32. वही, शांति पर्व, अध्याय 49, श्लोक संख्या 21।
33. वही, अनुशासन पर्व, अध्याय 98, श्लोक संख्या 16, पृ0 5789।
34. वही, द्रोण पर्व, अध्याय 69, पृ0 3272।
35. वही, आदि पर्व, अध्याय 7, श्लोक संख्या 8, पृ0 67
36. महाभारत, आदि पर्व, अध्याय 24, श्लोक संख्या 10–13, पृ0 94।
37. वही, आदि पर्व, अध्याय 25, श्लोक संख्या 1.2.5–8, पृ0 95।
38. वही, सभा पर्व, अध्याय 5, श्लोक संख्या 8, पृ0 675।
39. वही, आदि पर्व, अध्याय 7, श्लोक संख्या 8, पृ0 67।
40. वही, उद्योग पर्व, श्लोक संख्या 5।
41. वही, शांति पर्व, अध्याय 120, श्लोक संख्या 8, पृ0 4728।
42. वही, वन पर्व, अध्याय 16, श्लोक संख्या 2, पृ0 994।